नारी का अस्तित्व

कु. पूजा शर्मा,
पुत्री इं. मुकेश कुमार शर्मा

इस इक्कीसवीं सदी में,
हर नेकी और बदी में,
क्यों जा रहा है मुझे घसीटा,
कोई जल रही है, किसी को जा रहा है पीटा,
किसी का हो रहा है अपहरण,
किसी का हो रहा है चीर हरण,
कोई बलात्कार की बन शिकार,
समाज के सम्मुख कर रही चीत्कार,
क्या यही नारी की सदी है ?
क्यों आज भी वह परिचय को मोहताज ?
कभी किसी की बेटी,
कभी किसी की पत्नी,
कभी किसी की माँ,
क्या यही है नारी का अस्तितत्व ?
इस पुरूष प्रधान समाज में,
इन नारी के ठेकेदारों के राज में ,
हमें खुद अस्तित्व बचाना है,
अपने पैरों पर खड़े होकर दिखाना है,
जब तक ना पलट जाये पासा,
बनकर के हमें सानिया, पी.टी. उषा,
अपनी पहचान स्वयं बनानी होगी,
फिर होगी हमसे पुरूष की पहचान,
तब बढ़ेगा नारी का सच्चा मान ।